खण्ड 2:
देहधारी होने के पश्चात उसकी ईश्वरीयता

हम परमेश्वर के पुत्र को परमेश्वर पिता की बुद्धि और सामर्थ के रूप में देख चुके हैं। भौतिक तत्वों से बनाया गया हमारा यह अद्‌भुत संसार परमेश्वर के ज्ञान और सामर्थ के प्रकाश का आधार उपलब्ध करवाता है।

परमेश्वर के हाथ की इस विशाल कारिगरी में हमारा यह निवास स्थान असंख्य आकाश गंगाओं जिनके माप का कोई पता नहीं, में से एक सौर मण्डल के कई ग्रहों में से एक छोटे से ग्रह में है जिसे ''पृथ्वी'' कहा जाता है। पृथ्वी को परमेश्वर की ओर से उस एकमात्र जीवित प्राणी के रहने के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में तैयार किया गया था जिसे परमेश्वर का स्वरूप अर्थात मनुष्य कहा जाता है।

निस्संदेह यह ईश्वरीय/मानवीय सम्बन्ध परमेश्वर की दिलचस्पी और मानवीय इतिहास में उसके शामिल होने का आधार है। परन्तु हमारे साथ उसके निकट सम्बन्ध के ढंग और सीमा यदि बाइबल में न लिखी होती तो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। पवित्र शास्त्र से हम पता लगाते हैं कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा मनुष्य की सृष्टि में सभी सक्रिय थे। पवित्र शास्त्र में हमें यह भी पता चलता है कि परमेश्वर के साथ उचित सम्बन्ध बनाए रखने में मनुष्य की अवज्ञा के कारण हुई असफलता से परमेश्वर और मनुष्य में दूरी बढ़ गई।

परमेश्वर और हमारे बीच की दूरी हमारे अपने प्रयासों से नहीं मिटाई जा सकती थी; और परमेश्वर अपने पवित्र स्वभाव के कारण, हमें दागी अर्थात पापी स्थिति में ग्रहण नहीं कर सकता था। किसी भी प्रकार के मेल के लिए परमेश्वर को तीन विशेषे ढंग अपनाने आवश्यक थे। पहला, वह स्वयं मनुष्य जाति और अपने बीच पड़ी खाई को पार करने के लिए एक पुल बनाए। दूसरा, उसके लिए यह आवश्यक था कि वह ऐसा साधन उपलब्ध करवाए जिससे हम उस पुल को पार करके उसके पास जा सकें। तीसरा, सफलतापूर्वक पार करने में हमें योग्य बनाने के लिए उसे निरन्तर हमें सामर्थ, गंभीरता, योग्यताएं और अगुआई देनी आवश्यक है।

हमारी ओर से परमेश्वर का ''व्यक्तिगत'' शामिल होना यीशु मसीह के व्यक्ति में हुआ, जिसके लहू से परमेश्वर और हमारे बीच की दूरी मिट गई (इफिसियों 2:12, 13; कुलुस्सियों 1:19-22)। इसी कारण, परमेश्वर देहधारी हुआ और हमारे मध्य रहा था (यूहन्ना 1:14)। आइए विचार करें कि कैसे यीशु, अर्थात देहधारी हुआ परमेश्वर-परमेश्वर और मनुष्य दोनों ने अपने परमेश्वर होने को इस पृथ्वी पर रहते हुए कैसे दिखाया।